श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

विष्णु जी दे 24 अवतार

32 सेवा अपराध

श्रीमद् भागवत का यह सार
भगवद् भक्ति ही आधार

विष्णु जी दे 24 अवतार

सनकादि अवतार

वराह अवतार

नारद अवतार

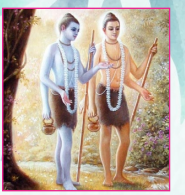
नर नारायण अवतार

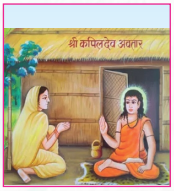

कपिल अवतार

दत्तात्रेय अवतार

यज्ञ अवतार

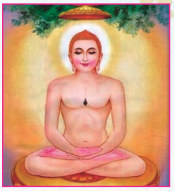
ऋषभदेव अवतार

पृथु अवतार

मत्स्य अवतार

कच्छप अवतार

धन्वंतरि अवतार

मोहिनी अवतार

नरसिंह अवतार

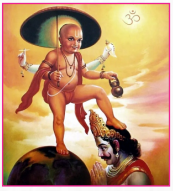
वामन अवतार

हयग्रीव अवतार

परशुराम अवतार

व्यास देव अवतार

राम अवतार

हंस अवतार

बलराम अवतार

कृष्ण अवतार

बुद्धदेव अवतार

कल्कि अवतार

32 सेवा अपराध

श्रीमद्भागवत महापुराण में बताए गए 32 सेवा अपराध जिनसे बचना चाहिए जिससे कि किसी भी स्तोत्र का उच्चारण करने का पूर्ण लाभ प्राप्त हो तथा वह फलदायी बने-

1. सवारी पर चढ़कर अथवा पैरों में खड़ाऊ पहनकर श्री भगवान के मंदिर में जाना।
2. रथयात्रा, जन्माष्टमी आदि उत्सवों का न करना या उनके दर्शन न करना।
3. श्रीमूर्ति के दर्शन करके प्रणाम न करना।
4. अशौच-अवस्था में दर्शन करना।
5. एक हाथ से प्रणाम करना।
6. परिक्रमा करते समय भगवान के सामने आकर कुछ देर न रुककर फिर परिक्रमा करना अथवा केवल सामने ही परिक्रमा करते रहना।
7. श्री भगवान के श्रीविग्रह के सामने पैर पसारकर बैठना।
8. दोनों घुटनों को ऊंचा करके उनको हाथों से लपेटकर बैठ जाना।
9. मूर्ति के समक्ष सो जाना।
10. श्री भगवान के श्रीविग्रह के सामने भोजन करना।
11. श्री भगवान के श्रीविग्रह के सामने झूठ बोलना।
12. श्री भगवान के श्रीविग्रह के सामने जोर से बोलना।
13. श्री भगवान के श्रीविग्रह के सामने में बातचीत करना।
14. मूर्ति के सामने चिल्लाना।
15. श्री भगवान के श्रीविग्रह के सामने आपस में कलह करना ।
16. श्री भगवान के श्रीविग्रह के सामने पीड़ा देना।

17. श्री भगवान के श्रीविग्रह के सामने किसी पर अनुग्रह करना।
18. श्री भगवान के श्रीविग्रह के सामने निष्ठुर वचन बोलना।
19. श्री भगवान के श्रीविग्रह के सामने कम्बल से सारा शरीर ढंक लेना।
20. श्री भगवान के श्रीविग्रह के सामने दूसरों की निंदा करना।
21. श्री भगवान के श्रीविग्रह के सामने दूसरों की स्तुति करना।
22. श्री भगवान के श्रीविग्रह के सामने अश्लील शब्द बोलना।
23. अधोवायु का त्याग करना।
24. शक्ति रहते हुए भी गौण अर्थात सामान्य उपचारों से भगवान की सेवा-पूजा करना।
25. श्री भगवान को निवेदित किए बिना किसी भी वस्तु का खाना-पीना।
26. ऋतु फल खाने से पहले श्री भगवान को न चढ़ाना।
27. किसी शाक या फलादि के अगले भाग को तोड़कर भगवान के व्यंजनादि के लिए देना।
28. श्री भगवान के श्रीविग्रह को पीठ देकर बैठना।
29. श्री भगवान के श्रीविग्रह के सामने दूसरे किसी को भी प्रणाम करना।
30. गुरुदेव की अभ्यर्थना, कुशल-प्रश्न और उनका स्तवन न करना।
31. अपने मुख से अपनी प्रशंसा करना।
32. किसी भी देवता की निंदा करना।